शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ३९ : नई दिल्ली : ३० दिसम्बर से ५ जनवरी २०१३

नववर्ष के पावन अवसर पर

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का पावन सन्देश

अर्हम्

प्रतिक्षण काल बीत रहा है। एक दिन के स्थान पर दूसरा दिन, एक माह के स्थान पर दूसरा माह और एक वर्ष के स्थान पर दूसरा वर्ष अपना आसन जमा लेता है। सन् २०१२ की विदाई और सन् २०१३ का प्रारंभ होने जा रहा है। जिन लोगों के मन में नए वर्ष के प्रति उल्लास और उमंग है, वे सन् २०१३ के लिए पवित्र संकल्पों को स्वीकार करने का मानस बनाएं, जैसे–

- **मैं इस वर्ष क्रोधमुक्त रहने का अभ्यास करूंगा।**
- **मैं इस वर्ष प्रामाणिकता का अभ्यास रखूंगा, आदि।**

संकल्पों के अतिरिक्त, समय के सदुपयोग का प्रयास भी वांछनीय है। जो आदमी समय को बर्बाद करता है, वह बर्बाद हो जाता है। जो आदमी समय का उत्तम उपयोग करता है, वह महान बन जाता है। समय का अंकन हो और सन् २०१३ को पवित्र भावों और निर्मल कार्यों के द्वारा महत्त्वपूर्ण बनाने का प्रयास करें। शुभाशंसा।

आचार्य महाश्रमण

जिज्ञासा आपकी : समाधान पूज्यप्रवर का-४

प्रश्न-२३ :- आपने सुदूर क्षेत्रों की यात्राओं का संकल्प संजोया है, क्या इसके पीछे कोई विशेष उद्देश्य है?

उत्तर :- हमारे श्रावक सुदूर क्षेत्रों में रहते हैं, अवस्था की दृष्टि से अभी मेरे सामने अनुकूल समय है। परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी अपने आचार्यकाल में सुदूर प्रान्तों में पधार नहीं सके। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी भी असम, नेपाल, भूटान आदि क्षेत्रों में नहीं पधार सके थे। उस समय की स्थितियां रहीं होंगी, जिससे उनका पधारना नहीं हो सका। मैंने सोचा कि अभी अनुकूलता है तो क्यों न लंबी यात्रा करूं। इससे सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले श्रावकों की सार-संभाल हो सकेगी और उसके साथ-साथ मानव जाति के उत्थान का भी कुछ प्रयास किया जा सकेगा। आचार्य महाप्रज्ञजी ने भी मुझे फरमाया था कि तुम्हें यात्राएं करनी हैं, इसलिए मैंने यात्रा करने का मानस बनाया।

प्रश्न-२४ :- जैन धर्म जातिवाद को नहीं मानता, फिर भगवान महावीर का गर्भ संहरण क्यों हुआ?

उत्तर :- मूलतः जैनधर्म के महापुरुषों ने यह काम नहीं किया। गर्भ संहरण का काम तो किसी देवता ने किया। अब देवता ने किया तो उसका अपना चिंतन रहा होगा। भगवान महावीर का गर्भ संहरण जैन आचार्यों ने नहीं कराया, जैन श्रावकों ने भी नहीं कराया। देवता ने किया तो वह जैनधर्म के सिद्धान्तों को जानने वाला था या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता।

दूसरी बात--मान लें इन्द्र जैसे देवता को इस बात की जानकारी रही होगी तो उसका यह चिंतन

रहा होगा कि तीर्थंकर जैसा व्यक्ति उत्पन्न होने वाला है तो कम से कम वह किसी प्रतिष्ठित कुल में जन्म ले। किसी अप्रतिष्ठित कुल में एक महापुरुष क्यों उत्पन्न हो? इस तरह गर्भ संहरण के पीछे देवताओं का अपना चिंतन रहा होगा। उन्होंने अपने हिसाब से जो उचित लगा, वह किया। जैन आचार्यों ने ऐसा काम न किया, न करवाया।

प्रश्न-२५ :- फिर जैनधर्म में वर्णित उच्च गोत्र और नीच गोत्र से क्या तात्पर्य है?

उत्तर :- उच्च गोत्र और नीच गोत्र किस रूप में है, उसे समझने की जरूरत है। उच्च गोत्र एक ऐसा गोत्र है, जहां अनुकूलताएं भोगी जाती हैं। इसके विपरीत नीच गोत्र ऐसा गोत्र है, जहां प्रतिकूलताएं भोगने को मिलती हैं। एक गोत्र में पैदा हो गया तो उसमें न अच्छे संस्कार मिल रहे हैं, न अच्छा वातावरण मिल रहा है, प्रतिकूलताएं हैं। इसका मतलब है, उसके अशुभ कर्मों के योग से ऐसा गोत्र प्राप्त हुआ है। इसके विपरीत एक ऐसा गोत्र, जहां संस्कार भी अच्छे मिल रहे हैं, प्रतिष्ठा भी है, प्रगति के अवसर भी हैं, शान्तिपूर्ण वातावरण भी है। इसका मतलब उसके शुभ कर्मों के योग से और भाग्य से अच्छा गोत्र मिला। इस रूप में उच्च गोत्र और नीच गोत्र का अपना स्थान है।

प्रश्न-२६ :- संयुक्त परिवार में सौहार्दपूर्ण वातावरण रखने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर :- संयुक्त परिवार में सौहार्दपूर्ण या कहूं अहिंसापूर्ण और मैत्रीपूर्ण माहौल के लिए पहली बात तो यह कि परस्पर में सामंजस्य का प्रयास रखना चाहिए और उसके लिए मुख्य रूप से दुराग्रह से बचना चाहिए। जहां दुराग्रह होता है, वहां सौहार्द और मैत्री में कमी आने की संभावना रहती है। छोटी मोटी बातों में आग्रह सामंजस्य में बाधक बन सकता है, इसलिए अनाग्रह की वृत्ति रहनी चाहिए।

दूसरी बात--स्वार्थवृत्ति हावी नहीं होनी चाहिए। केवल अपना हित नहीं, दूसरों के हित पर भी ध्यान दिया जाए तो सामंजस्य बना रह सकेगा।

तीसरी बात--दूसरों की रुचि को भी समझा जाए, उनकी रुचि में जो उपयुक्तता हो, उसे भी सम्मान दिया जाए तो सामंजस्य रह सकता है।

चौथी बात--सहिष्णुता या सहन करने की शक्ति हो तो परिवार में सामंजस्य और सौहार्द रह सकता है। इन चार बातों पर ध्यान दिया जाए तो काफी अनुकूल स्थिति बन सकती है।

प्रश्न :- जब सभी संप्रदाय आत्मकल्याण के लिए उत्साहित करते हैं तो क्या किसी भी संप्रदाय को अपनाया जा सकता है?

उत्तर :- संप्रदायों में कुछ तारतम्य हो सकता है। किसी संप्रदाय को स्वीकार करें तो क्यों करें, इस पर विचार करना चाहिए। सामने पांच-सात चीजें हैं तो उनमें जो चीज सबसे ज्यादा अच्छी लगे, उसे स्वीकार करना चाहिए। इसमें अपना तटस्थ चिंतन रहना चाहिए। उस तटस्थ चिंतन से जो अच्छा लगे, उसे स्वीकार करना चाहिए और जो भी स्वीकृत किया हुआ है, उसमें जो अच्छी-अच्छी बातें हैं, अच्छे नियम हैं, उन्हें जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए। अगर चुनाव का प्रसंग हो तो सर्वोत्तम बात यह है कि व्यक्ति यह देखे कि सबसे अच्छा कौन-सा है, जो श्रेष्ठ लगे, उसे स्वीकार करना चाहिए।

प्रश्न-२७ :- एक ओर तो सभी धर्मों में प्रेम का उपदेश दिया जाता है, दूसरी ओर राग को छोड़ने की बात कही जाती है, दोनों में संगति कैसे हो सकती है?

उत्तर :- प्रेम और राग में कुछ मूलभूत अन्तर है। पवित्र प्रेम का अपना महत्त्व है। राग में मुख्यतया पदार्थों के प्रति राग, भोगों के प्रति राग, बाह्य आकर्षण--ये सब हैं। इस तरह का राग त्याज्य है।

दूसरी बात--प्रेम हो तो सबके प्रति हो, किसी एक के प्रति ही क्यों? किसी व्यक्ति विशेष या वस्तु विशेष के प्रति प्रेम है तो वह प्रेम तो है, किन्तु यह छोटा प्रेम है। एक से तो प्रेम किया जाए

और दूसरों के साथ झगड़ा किया जाए, यह कैसा प्रेम? अगर सभी के प्रति प्रेम और मैत्री की भावना है तो यह उदात्त व उत्तम कोटि का प्रेम है और अगर यह राग भी है तो प्रशस्त राग है। राग में मुख्यतया पदार्थों के प्रति, भोगों के प्रति राग, सुख-सुविधा और ऐशो-आराम के प्रति अनुराग होता है। इसे प्राथमिकतया छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न-२८ :- जैन संस्कार विधि व्यापक क्यों नहीं बन पाई? इस विधि में कोई कमी है या इसके प्रति निष्ठा नहीं है?

उत्तर :- जैन संस्कार विधि के व्यापक न बन पाने के कुछ कारण हो सकते हैं। एक तो यह कि जैन संस्कार विधि तेरापंथ के द्वारा पोषित और प्रवर्तित है, इसलिए इतर संप्रदाय के लोग व जैनेतर लोग इसे क्यों महत्त्व देंगे? व्यापक न बन पाने का यह भी एक कारण हो सकता है।

दूसरी बात--ज्यादातर लोग अपने कुल परंपरा के पोषक होते हैं। हर परंपरा के अपने संस्कार होते हैं। उस परंपरा को छोड़कर या उससे हटकर किसी नई परंपरा को अपनाना उनके लिए कठिन होता है। जैन संस्कार विधि के व्यापक न बन पाने का यह भी एक कारण हो सकता है।

तीसरी बात--इस पद्धति के प्रचार-प्रसार के लिए कितना पुरुषार्थ किया गया, यह भी एक चिन्तनीय बिन्दु है। प्रचार-प्रसार के प्रयास की कमी भी इस विधि के व्यापक न बन पाने का एक कारण हो सकता है। फिर भी जहां तक मेरी जानकारी है थोड़े से वर्षों में इस पद्धति के पक्ष में कुछ वातावरण बना है।

प्रश्न-२९ :- प्रस्थान से पूर्व मंगलपाठ क्यों सुनना चाहिए?

उत्तर :- मंगलपाठ सुनने का कारण यह है कि आदमी कोई विशेष काम करने के लिए उद्यत होता है तो वह अपने इष्ट का स्मरण, पवित्र आत्माओं का स्मरण करता है। धार्मिकता की दृष्टि से देखें तो इसके पीछे भावना यह होती है कि कोई मंगल और पवित्र चीज मेरे साथ रहे, जिससे अमंगलरूपी विघ्न-बाधाएं मेरे निकट न आएं और आएं भी तो उनसे बचाव हो जाए।

दूसरी बात--यात्रा निर्विघ्न और मंगलमय हो सके, इसलिए भी प्रस्थान के समय मंगलपाठ सुना जा सकता है। मुख्य बात यह है कि साधना से अनुप्राणित संतों की वाणी का अपना महात्म्य और प्रभाव होता है, इसलिए लोगों की भावना यह रहनी चाहिए कि उनकी वाणी को सुनकर प्रस्थान करूं जिससे मेरी आत्मा भी मंगलमय रह सके।

प्रश्न-३० :- पहले जिस प्रकार जुआ खेलने का परित्याग करवाया जाता था, क्या आज जुए की तरह किया जाने वाला शेयर संबंधी व्यवसाय भी परित्याज्य है?

उत्तर :- जुए की तरह जो भी व्यवसाय होता हो, फिर उसका नाम जो भी हो, उसे छोड़ने का प्रयास होना चाहिए।

प्रश्न-३१ :- किस उम्र के बाद व्यवसाय से मुक्त हो जाना चाहिए?

उत्तर :- लगभग साठ से सत्तर वर्ष की उम्र में व्यक्ति को अपने जीवन को एक मोड़ देना चाहिए। जब यह अनुभूति हो जाए कि व्यवसाय के बिना भी मेरा काम अच्छी तरह चल सकता है, उस समय व्यवसाय से मुक्त होने का मानस बना लेना चाहिए।

प्रश्न-३२ :- किस उम्र के बाद व्यक्ति को सामाजिक कार्यों से मुक्त हो जाना चाहिए?

उत्तर :- यह व्यक्ति का अपना विवेक है कि कब इस पर चिंतन करे? सामाजिक कार्य भी कई तरह के हो सकते हैं। प्रश्नकर्ता का आशय किस स्तर के सामाजिक काम से है? अगर सामाजिक काम में भी कोई धार्मिक, आध्यात्मिक संस्था का काम है, जैसे ध्यान-योग की कोई संस्था है, जैन विद्या की कोई संस्था है, जीवनविज्ञान जैसे कल्याणकारी उपक्रमों की संस्था है तो वह तो काफी अंशों में आध्यात्मिक

काम ही है। उनके साथ कुछ व्यवस्थागत बात हो सकती है, पर यह काफी अंशों में आध्यात्मिक काम है। अगर नितान्त लौकिक काम हैं, उनसे तो आदमी को एक अवस्था के बाद जितना जल्दी हो सके निवृत्ति ले लेनी चाहिए। व्यक्ति आध्यात्मिक बने, यह अच्छी बात है। गृहस्थ जीवन में लौकिक कार्य करने होते हैं, किन्तु उनके साथ जितना संभव हो सके, धार्मिक साधना भी चलती रहे, यह भी अच्छी बात है।

प्रश्न-३३ :- सामायिक क्यों करनी चाहिए? क्या बिना सामायिक के समता की साधना नहीं हो सकती?

उत्तर :- सामायिक में सावद्य योग का प्रत्याख्यान होता है, जो सहज ही समता की साधना में नहीं हो सकता। सावद्य योग का प्रत्याख्यान सामान्य साधना में नहीं हो सकता। एक आदमी व्यापार करता है, और दूसरे धंधे करता है, कोई रसोई बनाता है, अन्य पारिवारिक कर्तव्यों का निर्वहन करता है, ऐसे में कितने सावद्य कार्य उसके द्वारा होते हैं। सामायिक में सावद्य योग का प्रत्याख्यान होता है, उसके साथ कोई शुभयोग की प्रवृत्ति भी की जाए, स्वाध्याय, जप आदि हो तो उससे निर्जरा का अतिरिक्त लाभ हो जाता है। इसलिए सामायिक की साधना और सामायिक के बिना की जाने वाली समता की साधना में अन्तर है।

प्रश्न-३४ :- अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा मंगल ग्रह पर अपना यान उतार चुकी है। क्या इसी तरह असंख्य योजन दूर महाविदेह क्षेत्र में भी पहुंचा जा सकता है?

उत्तर :- यह तो विज्ञान के क्षेत्र की बात है। विज्ञान ने बहुत विकास किया है और आगे भी कर सकेगा। मंगल ग्रह तक पहुंच सके हैं तो फिर आगे कभी महाविदेह क्षेत्र तक भी पहुंच पाएंगे या नहीं, कुछ कहना कठिन है।''

क्रमशः

पाठक ध्यान दें

विज्ञप्ति पाठकवर्ग द्वारा प्रेषित जिज्ञासाओं का समाधान परमपूज्य आचार्यप्रवर कर रहे हैं। पाठक अपनी विविध विषयक जिज्ञासाएं campoffice13@gmail.com पर प्रेषित कर सकते हैं। चयनित जिज्ञासाएं ही आचार्यवर द्वारा प्रदत्त समाधान के साथ यथासमय विज्ञप्ति में प्रकाशित की जा सकेंगी। इस सन्दर्भ में अग्रांकित बिन्दु ध्यातव्य हैं--

- जिज्ञासा संक्षिप्त, सारपूर्ण और स्पष्टतया लिखित हो।
- पत्र पर 'जिज्ञासा' शीर्षक अवश्य लिखें।
- जिज्ञासा अपने नाम और सम्पर्कसूत्र के साथ ही प्रेषित करें। अन्य कोई बात पत्र में न लिखें।
- जिज्ञासा प्रेषित करने के पश्चात् उत्तर प्राप्ति हेतु फोन, पत्र व्यवहार आदि न करें।

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण टापरा की ओर

विजयी बनो

१६ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः शहर गांव से लगभग आठ किमी. का विहार कर खींपसर पधारे। यहां भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केन्द्र में आपका प्रवास हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया में युद्ध भी चलता है। कभी-कभी दो देशों के बीच भी युद्ध हो जाता है। व्यक्ति के भीतर ऐसा संस्कार

होता है कि वह लड़ने लग जाता है। अध्यात्म के क्षेत्र में भीतर के युद्ध का निर्देश प्राप्त होता है। इसमें स्वयं को स्वयं से लड़ना होता है। जैन वाङ्मय में आठ आत्माओं का वर्णन मिलता है। उसमें एक है कषाय आत्मा। योग आत्मा, चारित्र आत्मा एवं वीर्यात्मा के द्वारा कषाय आत्मा से युद्ध करते हुए विजय प्राप्त करने का प्रयास किया जाए। क्रोध, मान, माया और लोभ--ये चार कषाय हैं। इन्हें जीतने का प्रयास अपने आप से युद्ध है। शिव सुख को प्राप्त करने का माध्यम है कषायमुक्त होने का प्रयत्न करना।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'हम उपशम के द्वारा क्रोध, विनम्रता के द्वारा मान, ऋजुता के द्वारा माया और संतोष के द्वारा लोभ को जीतने का प्रयास करें। यदि इन चारों को एक साथ परास्त करना संभव न हो तो एक-एक को परास्त करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए हमें संकल्पित होना होगा। प्रेक्षाध्यान पद्धति में कषाय नियंत्रण के प्रयोग निर्दिष्ट हैं। हम सत्पुरुषार्थ के द्वारा कषाय चतुष्टयी पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करें।'

पूज्यवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

जितनी समता, उतना धर्म

२० दिसम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर आज प्रातः खींपसर से लगभग तेरह किमी. का विहार कर 'झाख' पधारे। पूज्यवर के पदार्पण से स्थानीय निवासियों और प्रवासी श्रद्धालुओं का उत्साह चरम पर था। उनकी प्रसन्न मुखाकृति उनके आन्तरिक उल्लास को अभिव्यक्ति दे रही थी। गांव में पूज्यवर का प्रवास श्री मानमल नाहटा परिवार के आवास पर हुआ। अपने आराध्य को अपने आंगन में पाकर नाहटा परिवार कृतार्थता की अनुभूति कर रहा था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में नाहटा परिवार की बहनों ने स्वागत गीत का संगान किया। श्री प्रकाश नाहटा, नगीना नाहटा, रेखा नाहटा, तरुण नाहटा, ऋतु नाहटा, हिना नाहटा, पूजा मालू, भावना नाहटा, श्री भंवरलाल नाहटा, उषा मालू, मंजु मालू, मनीष मालू, पीयूष बालड़, जितेन्द्र सालेचा, प्रकाश श्रीश्रीमाल एवं श्री भीमाराम ने आचार्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। नाहटा परिवार के भाई-बहनों ने गीत के माध्यम से आराध्य की अभ्यर्थना की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'समता धर्म है, विषमता अधर्म है। इसलिए हमें अपने जीवन में समता की आराधना करनी चाहिए। व्यक्ति जितना-जितना राग-द्वेष में जाता है, उतना-उतना अधर्म में चला जाता है। जितना-जितना राग-द्वेष मुक्त रहता है, उतना-उतना धर्म में रहता है। जिनके जीवन में समता मूर्तिमान होती है, वे सुखी रह सकते हैं। समता के अनेक आयाम हैं। उनमें एक है क्षमा की साधना।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'व्यक्ति जब क्रोध में होता है, तब उसका चेहरा विकृत बन सकता है। व्यक्ति को मधुर बोलने का प्रयास करना चाहिए। लेकिन मधुरता भी सत्ययुक्त हो। असत्य प्रियवचन और अप्रिय सत्यवचन नहीं बोलना चाहिए। जीवन में जितनी समता होगी, व्यक्ति उतना ही धर्म के निकट रह सकेगा।'

झाख में श्रद्धा के पन्द्रह घर खुले रहते हैं। स्थानीय नाहटा, गोलेच्छा, मालू परिवार के सदस्यों को आज पूज्यप्रवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। आचार्यवर की प्रेरणा से श्रद्धालुओं ने विविध संकल्प स्वीकार किए।

मन बन जाएगा मन्दिर

२१ दिसम्बर। आज पूज्य आचार्यप्रवर ने झाख से प्रस्थान करने से पूर्व स्थानीय सभी जैन घरों का स्पर्श किया। आचार्यवर के इस अनुग्रह को प्राप्त कर श्रद्धालु आह्लादित थे। पूज्यवर लगभग तेरह किमी. का विहार कर 'बाटाडू' पधारे। अपने पूर्वजों की भूमि पर पूज्यवर का एकदिवसीय प्रवास प्राप्त कर बालड़ परिवार पुलकित और प्रमुदित था। यहां पूज्यवर का प्रवास श्री हेमराज माणकचन्द चाण्डक परिवार के निवास पर हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में बालड़ परिवार की बहनों ने गीत के माध्यम से अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति की। श्री प्रकाश बालड़, पीयूष बालड़, वैभव बाघमार, श्रीमती तारामती बालड़, सोनाली बालड़, सेजल बालड़, सपना संकलेचा, रुचिका बालड़, आकांक्षा बालड़, श्रीमती कविता बालड़, प्राची बालड़, पिंकी बालड़, नीतू बालड़, जेकचन्द बालड़ आदि ने गीत, कविता, वक्तव्य के द्वारा पूज्य आचार्यवर का स्वागत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सदाचार के लिए सद्ज्ञान अपेक्षित होता है। यदि ज्ञान सम्यक् होता है तो व्यक्ति आचरण भी अच्छा कर सकता है। अहिंसा की अनुपालना के लिए जीव-अजीव का ज्ञान अपेक्षित रहता है। हमारा व्यवहार अहिंसा से ओतप्रोत रहे। कोई हमारा अहित करे तो उसके प्रति भी द्वेषभाव नहीं होना चाहिए। गाली देने वाले के प्रति भी मैत्रीभाव रखना अहिंसा का एक प्रयोग है। जीवन में अहिंसा है तो मन मन्दिर बन सकेगा। फिर भगवान भावात्मक रूप में उस मन्दिर में स्वयं विराजमान हो सकेंगे। इसलिए अहिंसा के सही हार्द को समझकर उसे व्यवहृत करने का प्रयास करना चाहिए। ज्ञान और आचरण दोनों होते हैं तो सद्गति मिलने की संभावना रहती है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'अध्यात्म जगत में मोक्ष को गंतव्य माना गया है। पूर्व कर्मों की निर्जरा हेतु शरीर को धारण करना चाहिए। जीवन में अज्ञान अंधेपन और सदाचरणशून्यता लंगड़ेपन के समान होता है। दोनों का योग होने पर परिपूर्णता आती है। दोनों के समन्वय से ही व्यक्ति संसाररूपी अरण्य को पार कर सकता है। साधक दूसरों का भी उद्धार करने का प्रयास करे। किसी की आत्मा को तारने का प्रयास बड़ी बात होती है। जनोद्धार का पवित्र प्रयास अपनी आत्मा के लिए भी श्रेयस्कर होता है।'

मध्याह्न में बालड़ परिवार के सदस्यों को परमाराध्य आचार्यप्रवर की समुपासना का अवसर प्राप्त हुआ। पूज्यवर की प्रेरणा से श्रद्धालुओं ने विविध संकल्प स्वीकार किए।

भीमड़ा में पावन पदार्पण

२२ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः विहार से पूर्व बाटाडू के श्रद्धालु परिवारों के घरों को अपनी चरणरज से पावन किया। तत्पश्चात लगभग नौ किमी. का विहार कर 'भीमड़ा' पधारे। पूज्यवर के पदार्पण से स्थानीय बालड़ परिवार हर्षविभोर था। संकलेचा, चौपड़ा और खींवसरा परिवार भी अपने पूर्वजों की भूमि पर आचार्यवर का स्वागत कर प्रफुल्लित थे। प्रवास स्थल पर पधारने से पूर्व आचार्यवर साध्वी मार्दवयशाजी के संसारपक्षीय पिता श्री मांगीलाल बालड़ के निवास पर पधारे। गांव में रहने वाला एकमात्र तेरापंथी परिवार आराध्य को अपने आंगन में पाकर अत्यन्त आह्लाद का अनुभव कर रहा था। पूज्यवर ने कुछ क्षण यहां विराजमान होकर बालड़ परिवार को उपासना का अवसर प्रदान किया। गायत्री माध्यमिक विद्यालय में भी पूज्यवर का पदार्पण हुआ। भीमड़ा में आचार्यवर का प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्री संपत बालड़, सुश्री संगीता बालड़, श्री मांगीलाल बालड़, श्री महावीर संकलेचा, अध्यापक रामेश्वरजी, श्री पोकरराम चौधरी, श्री बालाराम मूढ, अक्षय चोपड़ा, हिना चौपड़ा, पूजा चौपड़ा, मुनिसुव्रत बालड़, सरिता चौपड़ा, रमेश चौपड़ा, पूनमचन्द चौपड़ा ने गीत, कविता, वक्तव्य आदि के द्वारा पूज्य आचार्यवर का स्वागत किया। बालड़ परिवार की महिलाओं, युवकों तथा संकलेचा परिवार की बहनों ने पृथक्-पृथक् स्वागत गीत प्रस्तुत किए। साध्वी मार्दवयशाजी ने अपनी जन्मभूमि पर अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। मुनि रजनीशकुमारजी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'सद्गति प्राप्त करने हेतु सद्ज्ञान अपेक्षित होता है। बहुश्रुत की उपासना के द्वारा सद्ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान प्रकाश देने वाला होता है, जबकि अज्ञान अंधकार के समान होता है। गुरु अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले होते हैं। ज्ञान की अपनी महिमा है। जो व्यक्ति ज्ञान को संजोकर रखता है और उसका सम्यक् उपयोग करता है, वह कल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकता है।'

भीमड़ा आगमन के सन्दर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आज हम भीमड़ा आए हैं। अपने साधु-साध्वियों और श्रावकों से संबद्ध गांव में आए हैं। यह साध्वी मार्दवयशाजी की जन्मभूमि है। ये खूब अच्छा विकास करें। अच्छी, सरल, विनीत और सेवाभावी बनकर खूब ज्ञानाराधना करती रहें।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'संकलेचा परिवार से दीक्षित मुनिश्री छोगालालजी स्वामी, मुनिश्री दुलीचन्दजी स्वामी (पेन्टर), मुनिश्री केसरीचन्दजी स्वामी, मुनिश्री बादरमलजी स्वामी जैसे पुराने और वरिष्ठ संतों से जुड़े इस भीमड़ा गांव में आए हैं। संकलेचा परिवार के मुनि विनीतकुमारजी, साध्वी पुलकितयशाजी भी धर्मसंघ में दीक्षित हैं। मुनि विनीतजी खूब अच्छी साधना और अच्छा विकास करते रहें। साध्वी पुलकितयशाजी खूब ज्ञान, ध्यान और साधना से पुलकित होती रहे।'

हो सकता है नाम अमर, पर कोई होता नहीं अमर

२३ दिसम्बर। आज प्रातः दस किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर 'हुड्डों की ढाणी' पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ। विद्यालय में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में बालमुनि ध्रुवकुमारजी ने गीत का संगान किया। मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'जीवन में धर्म का अवतरण होने से आत्मशुद्धि संभव है। जीवन में धर्म नहीं उतरा तो कल्याण और आत्मोत्थान संभव नहीं है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जीवन अनित्य है, यह जानते हुए भी कई बार व्यक्ति अनजान जैसा बन जाता है। व्यक्ति धन-वैभव में इतना आसक्त रहता है कि वह अमर की तरह आचरण करने लग जाता है। दुनिया में कोई भी अमर नहीं है। देवता संख्या में मनुष्य से ज्यादा होते हैं। उन्हें अमर अवश्य कहा है, पर वे न मरने वालें अमर नहीं होते। उनका भी आयुष्य पूरा होता है और वे अपने स्थान से च्युत होते हैं। जो जन्मा, वह मृत्यु को प्राप्त नहीं होगा, यह कभी संभव नहीं।

आगमवाणी को उद्धृत करते हुए आचार्यवर ने कहा--'पेड़ से पका हुआ पत्ता गिर जाता है, समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार यह जीवन भी एक दिन समाप्त हो जाता है। कोई बुढ़ापे में जाता है तो कई बचपन और जवानी में ही चले जाते हैं। मृत्यु के लिए कोई भी समय अनवसर नहीं है। कब, कौन कहां चला जाएगा, यह पता लगना भी कठिन है। जीवन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। चक्रवर्ती

आदि का आयुष्य नहीं टूटता। पाप का उपार्जन अधिक कर लिया तो अच्छी गति की संभावना नगण्य हो जाती है। जो धोखा देता है, ठगी, चोरी, लड़ाई-झगड़ा करता है, कलहप्रिय होता है, उसके पाप बंध होता है। गार्हस्थ्य में भी पवित्र जीवन जीया जा सकता है, साधना की जा सकती है। अनित्य अनुप्रेक्षा का महत्त्व इसीलिए है कि उसके द्वारा मोहकर्म को प्रतनु किया जा सकता है।'

दूगड़ परिवार(सरदारशहर-अहमदाबाद) के सदस्य संबल प्राप्ति हेतु श्रीचरणों में उपस्थित हुए। श्री कमल दूगड़ के सुपुत्र संजय दूगड़ का हृदय गति रुक जाने से व श्रेयस दूगड़ के सुपुत्र प्रतीक दूगड़ का मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) में एक दुर्घटना में देहान्त हो गया। पूज्य आचार्यवर ने सरदारशहर के मुख्य श्रद्धालु परिवारों में एक सागरमलजी दूगड़ परिवार के परिजनों को आध्यात्मिक संबल प्रदान किया।

पुष्ट हो पापभीरुता

२४ दिसम्बर। आज प्रातः पांच किमी. का विहार कर पूज्य आचार्यप्रवर 'छितर का पार' पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ। विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यतः जसोल व बालोतरा में बसे छाजेड़ परिवार से संबद्ध चन्द्रशेखरजी, नेमीचन्दजी, चम्पालालजी, ऋषभ, अंकित, श्रीमती नारायणीदेवी, शशिकला, हर्षा, खुशबू ने अपनी पैतृक भूमि पर पूज्यवर के स्वागत में अपने भाव प्रकट किए। परिवार की बहनों ने गीत का संगान किया। बाड़मेर जिला भाजपा के महामंत्री श्री कैलाश चौधरी ने अपने वक्तव्य में अपने क्षेत्र की ओर से पूज्यवर का स्वागत किया। पूर्व ग्रामसेवक श्री मंगलाराम भाटी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में संत-दर्शन को जागरण का प्रतीक बताते हुए कहा--'संतों का मार्गदर्शन निःस्वार्थ होता है। जो व्यक्ति अपने वर्तमान को विलासिता में गंवा देता है, वह अपने भविष्य को भी बिगाड़ लेता है। जीवन को धार्मिकता से ओतप्रोत बनाएं और गुरु से प्रेरणा प्राप्त कर अपनी आत्मा को निर्मल बनाने का प्रयास करें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'प्राणी अपने कृत कर्म के अनुसार फल भोगता है। इस सन्दर्भ में सिद्धान्त यह है कि कर्म कर्ता का अनुगमन करता है। ऐसा नहीं होता कि कर्म यह भूल जाए कि किसने किया? जिसने जो किया है, वह कर्म करने वाले का अगले जन्म तक पीछा करता है। कृतकर्म अपना फल देते हैं। वे जब उदय में आते हैं, उस समय ज्ञातिजन, मित्र, बन्धु कोई भी बंटवारा नहीं कर सकते। कर्मबंध वाले व्यक्ति को अकेले ही अपने किए कर्म को भोगना पड़ता है।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'व्यक्ति जागरूक बने। जैन वाङ्मय में अठारह पाप क्रियाओं का उल्लेख मिलता है। इनका सेवन करने से पाप कर्म का बंध होता है। कर्मों का फल व्यक्ति को स्वयं भोगना होता है। उसे कोई कम नहीं कर सकता। उन कर्मों को भोगते हुए व्यक्ति स्वयं को परवश और असहाय अनुभव करता है। परिजन कितना ही मोह करें, कर्मफल भोग के समय वे अकिंचित्कर होते हैं, कोई मदद नहीं कर सकते। वे ज्यादा से ज्यादा बीमार के लिए चिकित्सा और दवा की व्यवस्था कर सकते हैं, किन्तु रोगजन्य पीड़ा तो भोक्ता को ही भोगनी पड़ती है। अपेक्षित है कि व्यक्ति पापभीरुता का विकास करे और उसे पुष्ट करे। यह पापभीरुता ही व्यक्ति को दुःखमुक्ति की ओर ले जा सकती है।'

छित्तर का पार गांव से संबद्ध साध्वी अमितरेखाजी, साध्वी संवरयशाजी, समणी मानसप्रज्ञाजी के सन्दर्भ में आचार्यवर ने कहा--'दोनों साध्वियां व एक समणी तीनों अपना आध्यात्मिक विकास करें तथा धर्म की प्रभावना का प्रयास करें। यहां से संबद्ध छाजेड़ परिवार में धर्म-ध्यान का अच्छा विकास होता रहे।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

कवास में हुआ पूज्यवर का प्रवास

२५ दिसम्बर। प्रातः 'छितर का पार' से नौ किमी. का विहार कर पूज्य आचार्यप्रवर 'कवास' पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ। यह वही कवास है, जो सन २००६ में आई भीषण बाढ़ में डूब गया था। लोगों के कथनानुसार यहां तीस से चालीस फीट पानी का भराव था। दूर-दूर तक जलजलाकार था। कोई भी मकान दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था। सभी कच्चे मकान ढह गए थे और पक्के मकान पानी में डूबे हुए थे। उस त्रासदी से कवास उबरा और पुनः विकास की दिशा में गतिमान हो गया। अब तो इस क्षेत्र में तेल के कुओं की व्यापक खुदाई हो रही है। इस कारण इस क्षेत्र में व्यावसायिक गतिविधियां तेजी से चल रही हैं। दस वर्ष बाद तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य का ससंघ शुभागमन गांववासियों के लिए खुशियों की बहार लेकर आया। पूरे गांव में उत्साह और उमंग का वातावरण था।

विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में कवास महिला मंडल, चौपड़ा परिवार की बहनों एवं श्री लोकेश देवता ने स्वागत गीत का संगान किया। श्री मदनराज चौपड़ा, श्रीमती अणचीदेवी छाजेड़, श्री माणकचन्द छाजेड़, श्री ऋषभ चौपड़ा, श्री रूपचन्द चौपड़ा एवं श्री आनंद जीरावला ने पूज्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। तपस्वी श्री बाबूलाल ढेलड़िया देवता ने इकतालीस की तपस्या का पूज्यवर से प्रत्याख्यान लिया। समणी मानसप्रज्ञाजी ने अपनी जन्मभूमि की ओर से आराध्य की अभिवंदना की। साध्वी अमितरेखाजी व साध्वी संवरयशाजी द्वारा अभिवंदना में संप्रेषित कविता समणी ज्योतिप्रज्ञाजी ने प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित बाड़मेर के विधायक श्री मेवाराम जैन, बायतू पंचायत समिति के प्रधान श्री समर्थाराम एवं बाड़मेर नगरपालिकाध्यक्ष श्रीमती उषा जैन ने अपने वक्तव्य में आचार्यवर के पदार्पण व इस क्षेत्र में चल रही अहिंसा यात्रा को जिले का सौभाग्य बताया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'धार्मिक जीवन जीने वाले व्यक्ति के जीवन में शान्ति रहती है और उसका जीवन सुधर जाता है। व्यक्ति को जो कुछ प्राप्त है, उसमें संतुष्ट रहने का प्रयास करे। जिसके मन में तृष्णा जाग गई, उसके लिए तीनों लोकों का राज्य भी पर्याप्त नहीं होता। आचार्य महाश्रमणजी जन कल्याण के लिए गांव-गांव पदयात्रा कर रहे हैं। सभी उनके उपदेशों को जीवन में उतारने का प्रयास करें।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति अपने सद्‌गुणों से सज्जन व साधु पुरुष बनता है और दुर्गुणों से असज्जन और असाधु बनता है। इसलिए जीवन का ऊर्ध्वारोहण करने वाले गुणों को स्वीकारें और पतन की ओर ले जाने वाले दुर्गुणों को त्यागें। जैसे बूंद-बूंद से घट भरता है, उसी तरह एक-एक गुण से जीवन-कुंभ भरता है। एक दुर्जन अपनी कुबुद्धि से कलह, कदाग्रह उत्पन्न करता है, जबकि सज्जन और विवेकी व्यक्ति अपनी बुद्धि और विद्या का उपयोग सद्‌भाव, सौमनस्य और आत्मशान्ति के लिए करता है। विद्या और बुद्धि का उपयोग मुक्ति की दिशा में होना चाहिए, कुतर्क में नहीं। व्यक्ति को बुद्धि व तर्क का उपयोग सत्कार्य करने और तत्त्व को समझने के लिए करना चाहिए।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'धन का अहंकार और उसका दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। धन का सही और गलत उपयोग क्रमशः सज्जनता और दुर्जनता की पहचान है।' चार प्रकार की आत्माओं को व्याख्यायित करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'महात्मा, परमात्मा, सदात्मा व दुरात्मा--ये चार आत्माएं

होती हैं। व्यक्ति महात्मा न बन सके तो कम से कम सदात्मा तो अवश्य बने। जीवन में नैतिकता व ईमानदारी का विकास हो।' पूज्य आचार्यवर ने अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों की विस्तार से चर्चा करते हुए कहा--'ज्ञात हुआ कि कवास में पहले परमपूज्य गुरुदेव तुलसी पधारे, फिर गुरुदेव महाप्रज्ञजी पधारे और इस बार हमारा आना हो गया। साध्वी अमितरेखाजी और साध्वी संवरयशाजी यहीं की हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार दोनों साध्वियां तपस्या से संपृक्त रही हैं। समणी मानसप्रज्ञाजी भी यहीं की हैं। ये परस्पर भुआ-भतीजी हैं। सभी खूब साधना व सेवा करें। यहां का श्रावक-श्राविका समाज भी धर्म-ध्यान में आगे बढ़े।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

संबोधन-अलंकरण

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने गत दिनों जिन श्रावक-श्राविकाओं की श्रद्धा-भक्ति का उल्लेख करते हुए विशिष्ट संबोधन से संबोधित किया, उनके नाम इस प्रकार हैं--

श्रद्धानिष्ठ श्रावक

१. श्री मानमल नाहटा (बालोतरा)
२. श्री मांगीलाल बालड़ (भीमड़ा)
३. श्री मांगीलाल छाजेड़ (गंगाशहर)
४. श्री रतनलाल सुराणा (नोखा-जलगांव)
५. श्री कन्हैयालाल भंसाली (नोखा-बरपेटा)
६. श्री भैरूंलाल संकलेचा (पाली)
७. श्री निर्मल कोठारी (लाडनूं-अहमदाबाद)
८. श्री सूरजकरण दूगड़ (सरदारशहर-मुम्बई)

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति

१. श्रीमती रेवतीदेवी छाजेड़ (गंगाशहर)
२. श्रीमती कौशल्यादेवी सुराणा (नोखा-जलगांव)
३. श्रीमती कमलादेवी भंसाली (नोखा-बरपेटा)
४. श्रीमती संगीतादेवी श्यामसुखा (सरदारशहर)
५. श्रीमती सुशीलादेवी दूगड़ (सरदारशहर)
६. श्रीमती सोनादेवी दूगड़ (सरदारशहर-मुम्बई)
७. श्रीमती केसरदेवी बालड़ (भीमड़ा)
८. श्रीमती अणचीदेवी वडेरा (टापरा)
९. श्रीमती सुनीतादेवी कोठारी (लाडनूं-अहमदाबाद)
१०. श्रीमती मनोहरीदेवी कोठारी (लाडनूं)
११. श्रीमती पिंकी बोथरा (बरपेटारोड)
१२. श्रीमती रेशमीदेवी संकलेचा (पाली)
१३. श्रीमती बक्सूदेवी बालड़ (बायतू)
१४. श्रीमती पानीदेवी गादिया (गुड़ारामसिंह)
१५. स्व.श्रीमती छाऊदेवी खाब्या (भीलवाड़ा)

स्मृति-संबल

- ईडवा निवासी कोलकाता प्रवासी श्रीमती सरोज नाहर (धर्मपत्नी-श्री प्रकाश नाहर) का निधन हो गया। वे साध्वी संकल्पश्रीजी की संसारपक्षीया चचेरी बहिन थीं। कोलकाता महिला मंडल की सक्रिय सदस्य रही सरोज नाहर सामायिक के साथ भक्तामर स्तोत्र आदि का नियमित पाठ करती थीं। उनके पति प्रकाशजी जीवनविज्ञान के कार्य से जुड़े हुए हैं।
- टमकोर निवासी खारूपेटिया (असम) प्रवासी श्रीमती सिरेकंवरीदेवी चोरड़िया (धर्मपत्नी-स्व. मोतीलालजी चोरड़िया) का देहावसान हो गया। वे स्वर्गीय मुनि संगीतकुमारजी की संसारपक्षीया भाभी थीं। रात्रि भोजन परिहार, नवकारसी एवं सामायिक साधना आदि उनका नित्यप्रति का नियम था।

तत्त्वज्ञानी श्रावक श्रीचन्दजी चोरड़िया 'न्यायतीर्थ' उनके देवर हैं। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।

- पड़िहारा निवासी, गुवाहाटी प्रवासी श्री शुभकरण सुराणा का अस्सी वर्ष की उम्र में देहान्त हो गया। श्री सुराणा श्रद्धाशील श्रावक थे। श्री रिधकरणजी सुराणा एवं उपासक श्री सुमेरमलजी सुराणा उनके अनुज हैं। महासभा के जनगणना कार्य से संपृक्त रहे स्व. नवरतनजी सुराणा उनके ज्येष्ठ पुत्र थे। सुराणा परिवार श्रद्धाशील और शासनभक्त परिवार है।
- सरदारशहर निवासी दिल्ली प्रवासी श्री जुगराज चिंडालिया (सुपुत्र-स्व.जयचन्दलालजी चिंडालिया) का असाध्य बीमारी में देहावसान हो गया। वे स्व. मुनि रोशनलालजी के संसारपक्षीय अनुज थे। तपस्या में पन्द्रह तक की लड़ी संपन्न की थी। उपवास में पंचोला तक तो उनका चलता ही रहता था। इसके साथ नौ मासखमण करके वे तपस्वी श्रावक की कोटि में आ गए थे। असाध्य बीमारी की स्थिति में उन्होंने उल्लेखनीय सहनशीलता का परिचय दिया। उनकी धर्मपत्नी तारा श्रद्धाशील श्राविका है।
- वाव निवासी श्रीमती चम्पाबेन संघवी (धर्मपत्नी-स्व.नरपतभाई संघवी) का निधन हो गया। वह धर्मपरायण, सुसंस्कारी एवं सेवाभावी श्राविका थी। तप-त्याग से भावित व नित्य सामायिक करने वाली चम्पाबेन प्रतिवर्ष गुरुदर्शन एवं सेवा का लाभ लेती थी। साधु-साध्वियों की मार्गवर्ती सेवा वे बहुत मनोयोग से करती थीं। उन्होंने अपने जीवन में कई तपस्याएं भी कीं। साध्वी पुष्पावतीजी इसी परिवार से संबद्ध थीं।
- समदड़ी निवासी श्री छगनराज जीरावला का अहमदाबाद में देहावसान हो गया। समदड़ी तेरापंथी सभा के वे वर्षों तक अध्यक्ष रहे। छगनराजजी साध्वी सम्यकयशाजी के संसारपक्षीय पिता एवं मुनि मदनकुमारजी के संसारपक्षीय चाचा थे। आजीवन उनके जमीकन्द का त्याग था। नियमपूर्वक सामायिक करनेवाले जीरावलाजी सेवाभावी और आयुर्वेदिक चिकित्सा के जानकार थे।
- बीदासर निवासी हैदराबाद प्रवासी श्री जंवरीमलजी सेखानी का चौबीस दिन के तिविहार एवं सत्ताईस घंटे के चौविहार संथारे में स्वर्गवास हो गया। वे साध्वी चांदकुमारीजी एवं मुनि विजयकुमारजी के संसारपक्षीय परिवार से संबद्ध थे। बारह वर्षों से अस्वस्थ चल रहे सेखानीजी ने स्व-प्रेरणा से प्रातः चाय-बिस्कुट व दवा ली और उसके बाद स्वतः संथारे का प्रत्याख्यान कर लिया। वे दृढ़निश्चयी व मजबूत मनोबल के श्रावक थे। संघ व संघपति के प्रति उनकी निष्ठा अटूट थी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर एवं महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का सन्देश सुनकर उनके हर्ष का पार नहीं रहा। अन्तिम समय में वहां प्रवासित साध्वी कंचनप्रभाजी एवं उनकी सहवर्तिनी साध्वियों का अच्छा आध्यात्मिक सहयोग मिला। उनके संथारे से धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई। संथाराकाल में उनका आवास धर्मस्थल जैसा बना हुआ था।
- विज्ञप्ति क्रमांक ३८ के पृ.११ पर 'स्मृति संबल' के अन्तर्गत इस पंक्ति को इस प्रकार पढ़ें - 'दौलतगढ़ निवासी श्रीमती संतोषदेवी आंचलिया (धर्मपत्नी श्री फतेहलाल आंचलिया) का स्वर्गवास हो गया। समणी हर्षप्रज्ञाजी इसी परिवार से संबद्ध हैं।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती रतनीदेवी चम्पालालजी बरमेचा (तारानगर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू मोतीलाल-कृष्णादेवी, पारसमल-सायरदेवी, अभयकुमार-माणकीदेवी, सुपौत्र राजेश,

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 29-12-2012 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

जिनेन्द्र, दिनेश, मुकेश, अमित, देवेन्द्र, आनंद व नवीन बरमेचा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. मोहनलालजी पोरवाल (कंटालिया-अहमदाबाद) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मनोहरदेवी, सुपुत्र भूपेन्द्रकुमार, नरेन्द्रकुमार, महेन्द्रकुमार, व सुपौत्र पुलकित, रौनक, विदित पोरवाल द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती रायदेवी कुंडलिया (धर्मपत्नी-स्व. आसकरणजी कुंडलिया, श्रीडूंगरगढ़) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र तोलाराम, सागरमल, सुपौत्र आनंद, आलोक, प्रपौत्र अमन, राघव कुंडलिया परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. मिलापचन्दजी पटावरी (सुपुत्र-स्व. नानगरामजी पटावरी, मोमासर-पाली) की पुण्यस्मृति में श्रीमती सरलादेवी, सुपुत्र प्रवीण, धर्मेन्द्र, सुपौत्र जय, आदित्य पटावरी, मोमासर-दिल्ली-कोलकाता द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती मगनीदेवी दूगड़ (धर्मपत्नी-स्व. पूनमचन्दजी दूगड़) एवं उनके सुपुत्र व पुत्रवधू बच्छराज-निर्मलादेवी, बाबूलाल-पुष्पादेवी, ललितकुमार-उषादेवी दूगड़, सरदारशहर (राजस्थान) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री नरेन्द्रकुमार मुणोत (सुपुत्र-श्री माणकलालजी मुणोत, राजाजी का करेड़ा) के ११ की तपस्या के उपलक्ष्य में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ममतादेवी, सुपुत्र जितेन्द्रकुमार, वीरेन्द्रकुमार मुणोत द्वारा प्रदत्त।

सन् २०१३ में लाडनूं में समायोज्य प्रेक्षाध्यान शिविर

सन् २०१३ में प्रेक्षा फाउण्डेशन जैन विश्वभारती, लाडनूं द्वारा समायोज्य शिविरों का कार्यक्रम इस प्रकार है--

२१-२८ फरवरी	१०-१९ मई (द्वितीय स्तर)	६-१३ अक्टूबर
१०-१७ मार्च	१०-१९ अगस्त (द्वितीय स्तर)	२४-३० नवम्बर
१४-२१ अप्रेल	१५-२२ सितम्बर	८-१५ दिसम्बर

सभी शिविरों में आवास एवं भोजन की व्यवस्था निःशुल्क रहेगी। स्थान सीमित है, इसलिए इच्छुक संभागी यथाशीघ्र मोबाइल नं.८२३३३४४४८२ पर सम्पर्क कर अपना स्थान आरक्षित करा सकते हैं।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर २७ दिसम्बर को सानंद बाड़मेर पधार गए हैं। यहां छह दिन का प्रवास है। १५ जनवरी २०१३ को बालोतरा पधारेंगे। यहां १६ जनवरी को दीक्षा समारोह समायोजित होगा। १८ जनवरी से ३१ जनवरी तक असाडा विराजेंगे। यहां २३ जनवरी को दीक्षा समारोह समायोजित होगा। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार १ फरवरी को मर्यादा महोत्सव हेतु टापरा पधार जाने की संभावना है।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पो. टापरा-३४४ ०२३ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ९६८००५५३८१, ९३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**